3 =

प्रश्न :- हिन्दी कहानी का उद्भव तथा विकास ?

भूमिका :- अनादि काल में मनुष्य किसी न किसी रूप में कहानी कहता है तथा सुनाता है। यही कारण है कि सारे संसार के सभी देशों में कथात्मक तथा उपदेशात्मक कहानियों का लंबा इतिहास देखा जाता है। भारत में ऋग्वेद, बौद्ध साहित्य, जैन साहित्य, जातक साहित्य, पुराण आदि में असंख्य कहानियां देखने को मिलती है परंतु आधुनिक कहानी का स्वरूप सर्वथा भिन्न है। तथा उसमें मात्र वर्णनात्मक तथा उपदेशात्मक कहानी है। हिन्दी का स्वरूप अंग्रेजी तथा इससे प्रभावित बांग्ला कहानी के अनुकरण का परिणाम है।

हिन्दी की प्रथम कहानी को लेकर अनेक विद्वानों में अलग-अलग मत है। उनके सभी मतों में भेद पाया जाता है। कुछ विद्वानों इंशा अल्लाह खाँ के द्वारा रचित 'रानी केतकी की कहानी' को प्रथम कहानी माना गया है। इन्दुमती, ग्यारह वर्ष का समय, बंग महिला की (दुलाई वाली) कहानी सरस्वती नामक पत्रिका में लिखी गई है, परंतु आधुनिक शोध के आधार पर माधव प्रसाद के

द्वारा रचित 'एक टोकरी भर मिट्टी' कहानी उल्लेख है। डा लालचंद गुप्त 'मंगल' कहानी का उल्लेख किया है।

पूर्वप्रेमचन्द युग
1. प्रेमचन्द युग
2. प्रेमचन्दोत्तर युग
3. आधुनिक युग
4.

1. **पूर्व प्रेमचन्द युग :-** हिन्दी कहानी के विकास यात्रा 'सरस्वती' तथा इन्दु पत्रि के प्रकाशन के साथ शुरू हुई है। सन् 1907 में बंग महिला की (दुलाई वाली) तथा 1909 में वृन्दाव लाल वर्मा द्वारा रचित 'राखी बन्द भाई' प्रकाशित हुई। इन्दु नामक पत्रिका के साथ ही जयशंकर प्रसाद ने हिन्दी कहानी के साहित्य में कदम रखा इन्होंने दोनो कहानियाँ ग्राम्य (1910) में तथा रसिया बालम (1912) में दोनो इन्दु नामक पत्रिका में प्रकाशित हुई। इन दोनों कहानियों में नवीनतम कल्पना की प्रधानता है। इसमें चन्द्रशेखर शर्मा गुलेरी का नाम उल्लेखनीय है। उसके द्वारा रचित कहानी 'उसने कहा कि' नामक कहानी अत्यधिक लोकप्रिय हुई। कला की दृष्टि से इसे उत्कृष्ट माना जाता है। इसमें कला की दृष्टि से काफी प्रसिद्धि मिली। 'इन्दुमती' नामक कहानी को ही हिन्दी की प्रथम कहानी माना जाता है। इसे हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी की संज्ञा दी गई है।

प्रेमचन्द युग :- प्रेमचन्द हिन्दी युग के प्रवर्तक माने जाते है। उन्होंने अपनी कहानियों में परिवेश से आस-पास के जीवन से जुड़े तत्वों का वर्णन किया है, उनकी कहानी में ग्राम्य जीवन का वर्णन है। उनके कहानियों के प्रत्येक पात्र हर वर्ग, जाति, धर्म से संबंधित है। प्रेमचन्द की प्रथम कहानी 'पंचपरमेश्वर' जो कि 1916 में प्रकाशित हुई तथा अंतिम कहानी कफन जो कि 1936 में प्रकाशित हुई। उन्होंने 300 से भी अधिक कहानियाँ लिखी। जो मानसरोवर के 8 खण्डों में प्रकाशित हुई।

कहानियाँ :- बड़े घर की बेटी, ठाकुर का कुआँ, शतरंज के खिलाडी आदि कहानियाँ उल्लेखनीय है।

प्रेमचन्द में जयशंकर प्रसाद भी दूसरे कहानीकार है, उन्होंने 69 कहानियाँ लिखी। आकाशदीप, पुरस्कार, गुण्डा आदि कहानियाँ उल्लेखनीय है। इसमें विश्वम्भर नाथ कौशिक भी प्रसिद्ध कहानीकार है है। उन्होंने ताई, काकी, पगली, शान्ति आदि कहानियाँ लिखी। उनकी कहानियों में विषय के अनुसार तत्सम् शब्द तथा संस्कृत निष्ठ है, ताई उनकी प्रसिद्ध कहानी है। इस कहानी से ही उन्हें प्रसिद्धि प्राप्त हुई।

विश्वम्भर नाथ कौशिक ने बाल विवाह, दहेज प्रथा, भ्रष्टाचार, अंधविश्वास तथा रूढ़ियों आदि कुरीतियों को आधार बनाकर अपनी कहानियाँ लिखी। इस प्रकार हम कह सकते है कि इस युग में सामाजिक तथा ऐतिहासिक कहानियों का भी उल्लेख किया गया है।

3. प्रेमचन्दोत्तर युग :- यह युग (1936-1950) तक का है। इसमें अनेक प्रकार की कहानियों का वर्णन देखने को मिलता है। इसमें मनोवैज्ञानिक विश्लेषण तथा मार्क्सवादी तथा आँचलिक कहानियों का उल्लेख किया गया है।

* मनोवैज्ञानिक विश्लेषण :- इसमें प्रमुख कहानीकार जैनेन्द्र, अज्ञेय, इलाचन्द्र जोशी' प्रसिद्ध कहानी कार रहे हैं। जैनेन्द्र जी ने अपनी कहानियों में मनोविश्लेषणात्मक का वर्णन किया है। उन्होंने समाज की समस्याओं को भी बताया है। जैनेन्द्र जी की कहानी पाजेब तथा फाँसी प्रमुख कहानी है।

* मार्क्सवादी :- इसमें मार्क्सवादी, प्रगतिवादी, समाजवादी की कहानियां लिखी गई है। इसमें प्रमुख कहानीकार यशपाल जी है। इन्होंने धर्मयुद्ध, वो दुनिया नामक कहानी लिखी है।

* आँचलिक कहानी :- इसमें पृथ्वी के किसी प्रमुख भू-भाग को पिछड़े युग की समस्या का वर्णन किया जाता है। इसे ही आँचलिक कहानी का आधार मान जाता है। इसमें प्रमुख कहानीकार फणीश्वर नाथ रेणु तथा नागार्जुन है। उन्होंने अपनी कहानियों में आँचलिकता को अधिक महत्व दिया है। उनकी कहानियां 'तीसरी कसम'

6773

इस, आदि प्रमुख कहानी संग्रह है।

5. आधुनिक युग :- 1950 ई० से इसमें कथ्य तथा शिल्प आदि भावों का वर्णन देखने को मिलता है। इसमें नयी कहानी का वर्णन देखा जाता है। इसमें नई कहानियाँ नये नाम से प्रसिद्धि प्राप्त हुई है। आधुनिक युग में कहानियों का नया रूप देखने को मिलता है। इसमें प्रमुख कहानीकार मोहन राकेश, धर्मवीर भारती, मन्नू भंडारी है। आधुनिक युग की कहानी मलबे का मालिक है। इसमें व्यक्ति के ~~अंतर्द्वंद्व~~ अंतर्द्वन्द्व का वर्णन है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि इसमें व्यक्तिगत तथा सामाजिक समस्याओं का उभरा हुआ रूप आधुनिक युग में देखने को मिलता है।

निष्कर्ष :- इस प्रकार हम कह सकते है कि हिन्दी कहानी का उद्भव तथा विकास में सामाजिक, ऐतिहासिक रूप भी देखने को मिलता है। इसमें सामाजिक कुरीतियाँ, जैसे दहेज प्रथा, बाल विवाह, भ्रष्टाचार, अंधविश्वास आदि को दूर करने का प्रयास किया गया है। इसमें हम निष्कर्ष रूप से कह सकते हैं कि इतने वर्षों में हिन्दी कहानी ~~में~~ इतना नहीं लिखा गया जितना कि अब

आने वाले समय में लिखा जा रहा है।
यह हिन्दी के उठे हुए स्तर का परिणाम है।